भारतीय संस्कृति पर हिंदू जीवन दर्शन का प्रभाव

डॉ. महेश कुमार गर्ग

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, राजकीय कन्या महाविद्यालय, गंगापुर सिटी

सार

भारतीय संस्कृति पर हिंदू जीवन दर्शन (सनातन परंपरा) का गहरा प्रभाव रहा है। यह दर्शन केवल पूजा-पाठ तक सीमित न होकर एक संपूर्ण जीवन शैली, आचार-विचार और विश्वदृष्टि का आधार है। [1, 2]

हिंदू जीवन दर्शन के प्रमुख प्रभाव

- वसुधैव कुटुम्बकम् और सह-अस्तित्वः संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानने की भावना भारतीय संस्कृति के मूल में है, जिससे समाज में सहनशीलता, आदर और भाईचारा को बढ़ावा मिलता है। [1, 2]
- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष (पुरुषार्थ चतुष्टय): जीवन को संतुलित चलाने के लिए चार पुरुषार्थ तय किए गए हैं, जिसमें भौतिक उन्नति (अर्थ और काम) के साथ नैतिक कर्तव्य (धर्म) और आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) को जोड़ा गया है।
- कर्म और पुनर्जन्म का सिद्धांतः 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' (कर्म किए जाओ) की अवधारणा ने भारतीय समाज में कर्तव्यपरायणता, जिम्मेदारी और न्याय के प्रति आस्था को मजबूत किया है। [1]
- त्याग और संयमः भारतीय संस्कृति में उपभोग से अधिक 'त्यागपूर्वक भोग' (तेन त्यक्तेन भुंजीथाः) को श्रेष्ठ माना गया है, जो भौतिकतावादी अंधी दौड़ के बजाय संतुलन सिखाता है। [1]
- प्रकृति और जीव के प्रति आदरः नदी, पर्वत, वृक्ष और पशुओं को भी देवत्व या किसी न किसी रूप में सम्मान देने की परंपरा रही है, जिससे प्रकृति संरक्षण की भावना संस्कृति में रची-बसी है।
- संस्कार और पर्व-त्योहारः जन्म से लेकर मृत्यु तक सोलह संस्कारों और ऋतुओं एवं खगोल विज्ञान पर आधारित पर्वों (जैसे दिवाली, मकर संक्रांति) के जरिए सामाजिक और पारिवारिक जुड़ाव बना रहता है।

परिचय

हिंदू जीवन दर्शन (सनातन जीवन पद्धति) केवल एक रूढ़िवादी पूजा-पद्धति नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक समग्र कला और विज्ञान है, जो मनुष्य को कर्तव्य, नैतिकता और आध्यात्मिकता का संतुलन सिखाती है। इसे धर्म पथ पर जीवन दर्शन के रूप में परिभाषित किया गया है। [1, 2, 3]

पुरुषार्थ (जीवन के चार उद्देश्य)

हिंदू दर्शन में मानव जीवन को एक उद्देश्यपूर्ण यात्रा माना गया है, जिसे चार पुरुषार्थों के जरिए संतुलित किया जाता हैः [1]

- धर्म (Dharma): नैतिक और कर्तव्यपूर्ण आचरण, समाज में सही मार्ग पर चलना। [1, 2]

- अर्थ (Artha): जीवन के निर्वाह और परिवार के लिए धन, संसाधनों और समृद्धि की प्राप्ति।
- काम (Kama): जीवन की जायज इच्छाओं, प्रेम, सौंदर्य और आनंद की संतुष्टि।
- मोक्ष (Moksha): जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से अंतिम मुक्ति और आत्मसाक्षात्कार। [1, 2]

चार आश्रम (जीवन के चार चरण)

मानव जीवन को सुव्यवस्थित रूप से जीने के लिए इसे चार चरणों या आश्रमों में बांटा गया है: [1]

- ब्रह्मचर्य आश्रम: शिक्षा, अनुशासन और ज्ञान अर्जन का काल (विद्यार्थी जीवन)।
- गृहस्थ आश्रम: विवाह, परिवार और सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन।
- वानप्रस्थ आश्रम: मोह-माया से विरक्ति और समाज को मार्गदर्शन देने का काल।
- संन्यास आश्रम: पूरी तरह से ईश्वर और अध्यात्म की तरफ समर्पित जीवन। [1]

प्रमुख दार्शनिक आधार

- कर्म सिद्धांत (Karma): हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है; व्यक्ति जैसा कर्म करेगा, वैसा ही फल पाएगा।
- पुनर्जन्म और आत्मा: आत्मा अNINAS (अमर) है और कर्मों के आधार पर नया शरीर धारण करती है (मृत्यु एक अवस्था परिवर्तन है)।
- वसुधैव कुटुम्बकम्: संपूर्ण विश्व एक परिवार है, और हर जीव में एक ही दिव्य ऊर्जा (ब्रह्म/आत्मा) का वास है। [1]

विचार-विमर्श

न्यूनतम रूप से, यह भारतीय दार्शनिक चिंतन की एक परंपरा को दर्शाता है। हालांकि, इसे एक व्यापक दार्शनिक सिद्धांत के रूप में भी समझा जा सकता है, जिसे सभी हिंदू विचारकों ने साझा किया हो। इस दार्शनिक या सैद्धांतिक अर्थ में "हिंदू दर्शन" शब्द का प्रयोग अक्सर व्यापक रूप से किया जाता है, लेकिन यह प्रयोग भ्रामक है। ऐसा कोई एक व्यापक दार्शनिक सिद्धांत नहीं है जिसे सभी हिंदू साझा करते हों और जो ज्ञानमीमांसा, तत्वमीमांसा, तर्कशास्त्र, नैतिकता या ब्रह्मांड विज्ञान जैसे विषयों पर उनके दृष्टिकोण को बौद्ध धर्म या जैन धर्म जैसे अन्य भारतीय धार्मिक आंदोलनों से जुड़े विपरीत दार्शनिक विचारों से अलग करता हो। इसलिए, भारतीय दर्शन के इतिहासकार आमतौर पर "हिंदू दर्शन" शब्द को उन दार्शनिक विचारों के संग्रह के रूप में समझते हैं जिनका कुछ प्रमुख हिंदू धार्मिक ग्रंथों (वेदों) से शाब्दिक संबंध है, और वे "हिंदू दर्शन" को किसी विशिष्ट व्यापक दार्शनिक सिद्धांत के रूप में नहीं पहचानते।[4,5,6]

इस प्रकार, हिंदू दर्शन में न केवल प्राथमिक और द्वितीयक धार्मिक महत्व के हिंदू ग्रंथों में निहित दार्शनिक सिद्धांत शामिल हैं, बल्कि हिंदू संप्रदायों के व्यवस्थित दर्शन भी शामिल हैं: न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा और वेदांत। कुल मिलाकर, हिंदू दर्शन ने भारतीय दर्शन के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और इसकी भूमिका स्थिर नहीं रही है: हिंदू दर्शन बौद्ध और जैन दर्शन से प्रभावित रहा है, और बदले में हिंदू दर्शन ने भारत में बौद्ध दर्शन को उसके बाद के चरणों में प्रभावित किया है। हाल के समय में, हिंदू दर्शन का विकास उस रूप में हुआ है जिसे कुछ विद्वान "नव-हिंदू धर्म" कहते हैं, जिसे पश्चिम के कथित संप्रदायवाद और

वैज्ञानिकता के प्रति भारतीय प्रतिक्रिया के रूप में समझा जा सकता है । इस प्रकार, हिंदू दर्शन का एक लंबा इतिहास है, जो ईसा पूर्व दूसरी सहस्राब्दी से लेकर वर्तमान तक फैला हुआ है।

हिंदू धर्म भारतीय उपमहाद्वीप में प्रचलित धार्मिक और दार्शनिक मान्यताओं के समूह को दर्शाता है। हिंदू धर्म विश्व की सबसे प्राचीन धार्मिक परंपराओं में से एक है और इसकी नींव वेदों पर आधारित है, जिन्हें अक्सर मानवता का सबसे प्राचीन जीवित ग्रंथ माना जाता है। यह एक ऐसा धर्म है जिसका पालन विश्व भर में किया जाता है। बाली, भारत, मॉरीशस और नेपाल में हिंदू बहुसंख्यक आबादी है, हालांकि एशिया, अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका के देशों में भी बड़ी संख्या में हिंदू धर्म का पालन करते हैं।

ऐतिहासिक और सैद्धांतिक कारणों से, कुछ आधुनिक भारतविदों ने पारंपरिक हिंदू धर्म और "नव-हिंदू धर्म" के बीच अंतर करने की परंपरा अपनाई है (देखें हैकर; हाल्बफास, भारत और यूरोप)। इस अंतर के आधार पर, "हिंदू धर्म" शब्द अक्सर भारतीय उपमहाद्वीप की कुछ पारंपरिक दार्शनिक और धार्मिक मान्यताओं के लिए प्रयुक्त होता है, जबकि "नव-हिंदू धर्म" उन आधुनिक धार्मिक और दार्शनिक मान्यताओं के लिए प्रयुक्त होता है जिन्हें उन भारतीयों ने व्यक्त किया है जिन्होंने अपने धार्मिक विचारों को पश्चिमी देशों के वैज्ञानिकता और संप्रदायवाद के पूर्वाग्रह के विपरीत परिभाषित किया है। आज विश्व में कई पश्चिमी शिक्षित व्यक्तियों (विशेषकर वे जो स्वयं को "हिंदू" मानते हैं) के लिए, "नव-हिंदू धर्म" शब्द के अंतर्गत आने वाला दर्शन उनकी धार्मिक और दार्शनिक मान्यताओं का प्रतीक है। यद्यपि नव-हिंदू धर्म निस्संदेह हिंदू दार्शनिक परंपरा का एक हिस्सा है, यह परंपरा के भीतर एक विशिष्ट विकास है। यहाँ "नव-हिंदू" और "नव-हिंदू धर्म" शब्दों का प्रयोग हिंदू चिंतन के इस हालिया विकास को स्पष्ट करने के लिए किया जाएगा। हिंदू धर्म के किसी भी भाग को दर्शाने के लिए "हिंदू" और "हिंदू धर्म" शब्दों का प्रयोग किया जाएगा। "हिंदू दर्शन" शब्द का प्रयोग हिंदू धर्म के दार्शनिक तत्वों के लिए ही किया जाएगा।

हिंदू दर्शन के इतिहास को मोटे तौर पर तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है, जो काफी हद तक एक दूसरे से जुड़े हुए हैं:

वेदों और द्वितीयक धार्मिक ग्रंथों में पाई जाने वाली गैर-व्यवस्थित हिंदू दर्शन (ईसा पूर्व दूसरी सहस्राब्दी से शुरू)

व्यवस्थित हिंदू दर्शन (ईसा पूर्व पहली सहस्राब्दी से प्रारंभ)[7,8,9]

नव-हिंदू दर्शन (19वीं शताब्दी ईस्वी में प्रारंभ)

हिंदू दर्शन को किसी निश्चित सिद्धांत तक सीमित करना कठिन है क्योंकि हिंदू धर्म स्वयं किसी सुस्थापित सिद्धांत से खुद को जोड़ना मुश्किल पाता है। यह बात शायद आश्चर्यजनक न लगे जब हम इस तथ्य पर विचार करें कि "हिंदू धर्म" शब्द पारंपरिक, औपनिवेशिक काल से पूर्व के हिंदू साहित्य में नहीं मिलता। इतिहास के आधुनिक काल से पहले, जिन लेखकों को हम हिंदू मानते हैं, वे स्वयं को इस उपाधि से नहीं पहचानते थे। यह शब्द स्वयं किसी भारतीय भाषा से उत्पन्न नहीं हुआ है, बल्कि संभवतः फारसी शब्द " सिंधु " से लिया गया है, जो लैटिन शब्द " इंडस " का समरूप है और जिसका प्रयोग भारतीय उपमहाद्वीप के निवासियों के लिए किया जाता था (देखें मोनिएर-विलियम्स, पृष्ठ 1298)। इस प्रकार इसका ऐतिहासिक उपयोग एक व्यापक शब्द के रूप में होता है जो कई संबंधित धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं को समाहित करता है जो स्पष्ट रूप से किसी अन्य भारतीय परंपरा का हिस्सा नहीं हैं, जैसे कि बौद्ध धर्म और जैन धर्म ।

हिंदू धर्म के अंतर्गत वर्गीकृत विचारों की भौगोलिक निकटता को देखते हुए, हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि उनमें कुछ व्यापक सैद्धांतिक समानताएँ होंगी। हालांकि, हिंदू धर्म से जुड़े कई विचार और प्रथाएँ बौद्ध धर्म और जैन धर्म जैसी पड़ोसी भारतीय धार्मिक–दार्शनिक परंपराओं में भी पाई जाती हैं। इसके अलावा, इनमें से कुछ विचार सभी हिंदू विचारकों में समान नहीं हैं। हिंदू परंपरा के भीतर विचारों की समृद्ध विविधता, जो गैर–हिंदू विचारों के साथ मेल खाती है, एक साझा, व्यापक सिद्धांत के आधार पर "हिंदू धर्म" की पहचान करना कठिन, बल्कि असंभव बना देती है।

भारतीय परम्परा और संस्कृति में शाश्वत जीवन मूल्यों को हीं 'सनातन धर्म' कहते हैं। कालान्तर में टिप्पणीकारों न इसे हीं 'हिन्दू धर्म एवं दर्शन' के नाम से संबोधित किया। आधुनिक काल में विचारधाराओं पर आधारित लिखित इतिहास में 'हिन्दू' एवं 'धर्म' के बारे में जनमानस में विकृत सोच पैदा की गयी। यदपि भारतीय चिंतन में धर्म, विचारधारा (Ideology) का नहीं अपितु जीवन दर्शन (Life Philosophy) का विषय है फिर भी जनमानस में इसे विचारधारा के रूप में हीं प्रस्तुत और प्रसारित किया गया। सभ्यता के इतिहास में शायद हीं किसी शब्द के साथ इतना छेड़–छाड़ किया गया हो जितना की "हिन्दू और धर्म" के साथ किया गया है। परिणामतः लोगों में अपनी हीं संस्कृति के प्रति भ्रम पैदा हुआ। कहना न होगा, यहीं भारतीय वैदिक समाज में हींन भावना पैदा करने, एवम विघटन का एक प्रमुख कारण रहा।

परिणाम

एक समय राष्ट्रवाद, संस्कृति, कला तथा साहित्य के क्षेत्र में देश का गौरव बढ़ाने वाला राज्य हिंसा,लूट–पाट, तथा कुव्यवस्था का प्रतीक है। करीब –करीब यहीं हाल पुरे देश का है। सत्ता लोलुप दलों एवं नेतावों ने इसे पुरे देश में फैलाया। कहना न होगा कि गाँधी जी द्वारा खिलाफत आन्दोलन के विचारधारा को समर्थन देने से यह रोग स्थायी हो गया और साथ हीं राजनीति में तुष्टिकरण की भी शुरुवात हुई। देखते–हीं–देखते नेतावों के द्वारा इसका उपयोग जाति–वर्ग में भी किया जाने लगा।

पुनः,आधुनिक कालखंड में भारतीयता को 'तोड़–मरोड़' कर प्रस्तुत करने के उत्तर्दायित्व जिस 'विचारधारा' ने किया उसे सम्मिलित रूप से ''वामपंथ'' या साम्यवाद और मार्क्सवाद कहते हैं। जैसे–जैसे वामपंथ नामक यह महामारी देश में फैलना शुरू हुआ,नाक्सलवाद,माओवाद,आतंकवाद,समाज एवं परिवार का विघटन तथा धर्मांतरण आदि जोरों से शुरू हो गया। वर्तमान NDA सरकार के स्वच्छ भारत अभियान का एक हिस्सा इस गन्दगी की सफाई भी होनी चाहिए। [10,11,12]

आइये, अब भारतीय जीवन दर्शन में ''हिन्दू'' और ''धर्म'' अक्षर की विवेचना तथा 'विचारधारा' पर आधारित इसकी कुत्सित व्याख्या पर प्रकाश डालते हैं। वामपंथी इतिहासकारों ने तो हिन्दू और धर्म दोनों को अपनी प्रायोजित लेखनी में कुत्सित विवेचना की है। स्वतंत्रता के बाद व्यवस्था ने इन इतिहासकारों को भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक संसथान (NCERT) नामक संसथान बनाकर इसे मूर्त रूप दिया। प्राचीन भारत के इतिहास को लिखने वाले श्रीमती रोमिला थापर से लेकर स्व.श्री रामशरण शर्मा तक ने वैदिक काल–खंड को मार्क्सवादी चश्मे से हीं व्याख्या किया है। श्री शर्मा ने तो उत्तर वैदिक काल,जिसका आधार

उपनिषद् भी था, का बहुत हीं सतही व्याख्या किया है। इस महाशय ने यह बताया है कि ‘‘आत्मा’’नामक कोई चीज नहीं है।आत्मा, राजा का हीं समानार्थी है। पुनः वे लिखते हैं कि दरअसल ‘‘आत्मा’’ की परिकल्पना ,एवं उसकी श्रेष्ठता, उपादेयता,को वैदिक ऋषियों ने इसलिए बढ़ा–चढ़ाकर बताया गया है ताकि ‘राजा’ के महत्व को बनाये रखें। उनके अनुसार यह वो काल था जब राजा के खिलाफ वैश्य एवम् शूद्र विद्रोह करने लगे थे। परिणामस्वरूप ब्राह्मण तथा क्षत्रिय दोनों के सिहांसन हिलने लगा था। अतः इस परिस्थिति से निपटने के लिए ब्राह्मणों ने आत्मा की कपोल कल्पना की।

इसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण के उदभव एवं विकास की जो कहानी छात्र–छात्राओं को पढ़ाई जाती है,वह और भी निंदनीय है। भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक संसथान (NCERT) द्वारा प्रकाशित इतिहास की पुस्तकों में भगवान् श्रीकृष्ण को एक चरवाहे से जनजाति नेता बनने, तदनन्तर भगवान बनने का चित्रण जैसा किया गया है। शास्त्रों का उदहारण देकर बताया गया है कि कैसे एक जनजाति नेता और चरवाहा गुप्त साम्राज्य के द्वारा पोषित हिन्दुवाद के प्रचलन के साथ भगवान श्रीकृष्ण के रूप में प्रचलित हो जाता है। कहना न होगा कि इससे निश्चय हीं पढ़ने वालों के मन में अपनी धर्म और संस्कृति के प्रति घृणा का भाव होना तथा पश्चिमीकरण के प्रति रुझान स्वाभाविक है। इन्हीं प्रायोजित इतिहस्कारों को मध्यकाल खंड के शुरू तक हिन्दू शब्द का प्रमाण नहीं मिलाता है।

पुरातन शास्त्रों में, हिन्दू धर्म, सिन्धु धर्म तथा सनातन धर्म समान अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं। वैदिक संहिताओं में ‘सिन्धु’ अक्षर के तीन अर्थ हैं–‘सिन्धु प्रदेश,’ ‘नदी एवं ‘महासागर।’ इस बहु–आयामी धर्म को वैदिक संहिता ऋग्वेद में ‘‘एकं सद विप्रा बहुधा वदन्ति’’ के रूप में उदघोषित किया गया है। पुनः उत्तर वैदिक काल में लिखित, विश्व के प्रथम वैज्ञानिक ग्रन्थ पाणिनि द्वारा रचित ‘अष्टाध्यायी ‘ में भी ‘हिन्दू’ अक्षर का विशद विश्लेषण है। हिन्दू अर्थात ‘‘हिंसाया दुयते या सः इति हिंदू’’ (जो हिंसा से दुखी होता हो वह हिन्दू है)।लेकिन प्रायोजित इतिहास लेखन के क्रम में वैदिक शब्दों का जब लौकिक अनुवाद किया गया तभी अर्थ का अनर्थ हो गया।

दूसरी ओर, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कहीं भी सामाजिक विज्ञान में हमें यह नहीं पढाया जाता कि 10,000 वर्षों के लिखित इतिहास में भारत ने विश्व के किसी भी देश पर आज तक आकर्मण नहीं किया है। किसी भी देश को उपनिवेश नहीं बनाया, न हीं किसी देश का आर्थिक शोषण किया। कभी भी यह प्रचार नहीं किया कि केवल हमारा धर्म ही सत्य और श्रेष्ठ है,और जो इसे नहीं स्वीकार करेगा उसे जीने का अधिकार नहीं है। पुनः 17 वीं शताब्दी के अंत तक वैश्विक व्यापार में हमारा हिस्सा सर्वाधिक था। हम ज्ञान, विज्ञान, रक्षा, विज्ञान, चिकित्सा आदि के क्षेत्र में अगुवा थे। प्रकृति,मानव जीवन रहस्य तथा योग और अध्यात्म का ज्ञान दुनिया को भारत की सबसे बड़ी देंन कहने का तात्पर्य है कि आधुनिक भारत में हमारी पीढ़ी को बड़े हीं युक्तिसंगत तरीके से इससे अलग रखा गया। परिणामस्वरूप देश का आत्मस्वाभिमान गिरा और लोगों में उद्यमिता का ह्रास हुआ

एक विद्वान ने कहा है कि संस्कृत के हिन्दू अक्षर से हीं अंग्रेजी का ह्यूमन (Human) शब्द बना है। अतः इसप्रकार हिन्दू धर्म मानव धर्म का हीं पर्याय है। केवल हिन्दू धर्म में हीं सम्पूर्ण मानवता के हित, सुख एवं स्वास्थ्य आदि की प्रार्थना के साथ उदघोषणा की गयी हैं: "लोक समस्ता सुखिनो भवन्ति।" "सर्वे भवन्ति सुखिनः। "एकं सद विप्रा बहुदा वदन्ति।" तथा "उदार चरितानाम तू वसुधैव कुटुम्बकम।" आपको अन्यत्र किसी भी पंथ में ऐसा नहीं मिलेगा। हमारे ही बंधुजनों ने भारतीय दर्शन में "आत्मा" के अस्तित्व को नकारा पर आज जब पश्चिम के वैज्ञानिकों ने 'गॉड पार्टिकल' की बात कि तो हम उसे प्रमाणिक मानने लगे। [13,14,15]

हद तो तब हो गयी जब भारतीय संविधान में उल्लिखित रिलिजन शब्द का अनुवाद "धर्म" किया गया। यह सनातन परंपरा के साथ बड़ा अन्याय हुआ। यहाँ रिलिजन का अर्थ–मत,संप्रदाय या पन्थ होना चाहिए था । इसीप्रकार सेकुलरिज्म का अनुवाद धर्मनिरपेक्षता हो गया। यहीं से देश के अधोगति प्रारंभ हो गया। इसी के साथ यह भी प्रसारित किया गया कि हिन्दू दर्शन में धर्म का संसथागत स्वरुप स्पष्ट नहीं है। बात–बात में 'मनु स्मृति' को कोट किया जाता है।

इसी स्मृति' के श्लोक हैं "अहिंसा सत्यमस्तेयम शौचम इन्द्रियनिग्रहः। एतं सामासिकं धर्मं चातुर्वण अब्रवीन्मनुह।। अतः भारतीय चिंतन में 'धर्मनिरपेक्ष' का अर्थ हुआ कि हमारी उपर्युक्त मूल्यों अर्थात सत्य, अहिंसा, अस्तेय (भ्रष्टाचार द्वारा सम्पति सृजन नहीं करना), शौच (मन,शरीर,विचार,शब्द एवं कर्त्तव्य के स्तर पर पवित्रता), और इंन्द्रियनिग्रह(इन्द्रियों पर नियन्त्रण) का हमारे जीवन में कोई स्थान नहीं है। अब जरा सोचिये, धर्म अर्थात नैतिक मूल्यों के अस्तित्व के अभाव में समाज व देश की स्थिति क्या होगी? ये वही मूल्य हैं जो ऐतिहासिक कालक्रम में "हिन्दू" के रूप में जाना गया। इसप्रकार अंग्रेजी शब्द हिंदूइज्म धर्म का हीं पर्याय है। भगवान श्रीकृष्ण ने भी गीता के अंतिम अध्याय में कहा है कि "यतो धर्मस्तोतो जयः।" अर्थात जहाँ धर्म है वहीं विजय है। आज देश में धर्म के अभाव के कारण हीं रामराज्य के ऊपर रावणराज्य ने स्थान ले लिया है।

हिंदू दर्शन कोई एक विश्वास प्रणाली नहीं है। यह प्राचीन ज्ञान परंपराओं का एक समूह है जिसका एक ही लक्ष्य है: आपको आपके सच्चे स्वरूप से अवगत कराकर दुखों से मुक्ति दिलाना। आधुनिक वैश्विक चर्चाओं में एक विशेष रूप से प्रमुख धारा अद्वैत वेदांत है—वह अद्वैत दर्शन जो यह घोषित करता है कि आत्मा (आपका व्यक्तिगत स्वरूप) ब्रह्म (परम वास्तविकता) से भिन्न नहीं है । आप वह शरीर नहीं हैं जो जन्म लेता है और मर जाता है। आप वह मन नहीं हैं जिसके अंतहीन विचार हैं। आप वह अहंकार नहीं हैं जो कहता है "मैं जॉन हूँ"। आप शुद्ध चेतना हैं—निराकार, कालातीत, जन्म रहित, मृत्यु रहित, आनंदमय चेतना। इस चेतना में संसार स्वप्न देखने वाले के स्वप्न के समान प्रकट होता है। एकमात्र समस्या यह है कि आप भूल गए हैं। इसका समाधान कहीं नई जगह जाना, किसी बाहरी व्यक्ति की पूजा करना या कुछ अलग बनना नहीं है। इसका समाधान अंतर्मुखी होना, "मैं कौन हूँ?" पूछना, "मैं" के विचार को उसके स्रोत तक खोजना और आत्मा के रूप में विश्राम करना है। यह कोई विश्वास नहीं है जिसे अपनाना है। यह एक ऐसी खोज है जिसे जीना है। हिंदू दर्शन आपसे आस्था की मांग नहीं करता। यह आपके अन्वेषण

को आमंत्रित करता है। ग्रंथों को पढ़ें। इन विधियों का अभ्यास करें। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रश्न पूछें—पूरी ईमानदारी से, निरंतर। "मैं कौन हूँ?" तब तक पूछते रहें जब तक कि पूछने वाला ही विलीन न हो जाए। जो शेष बचेगा वह आप ही होंगे जो आप हमेशा से रहे हैं—स्वयं, मुक्त, शाश्वत, आनंदमय, अद्वितीय।[16,17,18]

निष्कर्ष

हिन्दू राष्ट्र और हिन्दू धर्म को लेकर पूरे देश में कुछ लोगों ने एक मुहिम चला रखी है । अनेक राजनेता एवं धार्मिक जन इसका उल्टा.सीधा अर्थ निकालकर देश की भोली भाली जनता को दिग्भ्रमित कर रहे हैं । वे अपनी पूर्वाग्रहयुक्त बातों को समाज एवं राष्ट्र पर थोपने का प्रयास कर रहे हैं । वे सही वस्तुस्थिति से ना तो देश को अवगत कराते हैं और ना तो जनता स्वयं जानने का प्रयास कर रही है ।

भारतवर्ष का पुराना नाम आर्यावर्त था । यहां जो धर्म प्रचलन में था उसे हिन्दू धर्म ना कहकर वैदिक या सनातन धर्म कहा जाता था । शैव वैष्णव एवं शाक्त उसके मुख्य भेद हैं इसमें अनेक पंथ एवं सम्प्रदाय निकले हुए हैं ।वेद उपनिषद आरण्यक ब्राहमण संहिता स्मृतियां पुराण रामायण एवं महाभारत इसके स्रोतपूर्ण ग्रथ रहे हैं ।आर्यावर्त भूभाग में जो परम्परायें सिद्धान्त आचरण एवं पद्धितियां संचाजित हो रही थीं बहुत बाद में उसे कुछ तथाकथित हिन्दू लोगों ने अपना लिया और अपने से सम्बद्ध की लिया । हिन्द महाद्वीप के भूभाग में रहनेवाले सभी लोगों को हिन्दू कहा लाने लगा[19]

आर्यावर्त के लागों का जीवन बहुत ही व्यवस्थित विकसित तथा सर्वग्राहय था । संयुक्त परिवार मे सभी सदस्यों को पर्याप्त स्वतंत्रता भी थी और अनुशासन भी था । परिवार मिलकर ग्राम या गोत्र तथा ग्राम मिलकर वंश का निर्माण करते थे । वंषों से जन या जनपद बनते थे । विवाह एक पवित्र बंधन होता था । साधारणतया एक पत्नी या एक पति प्रथा थी परन्तु बहु पत्नी या बहुपति पर कोई रोक भी नहीं था । दोनों संयुक्त रुप से ही धार्मिक कार्यों में भाग लेते थे । बालविवाह नहीं होते थे परन्तु स्वेच्छया विवाह भी होते थे । गोत्र या वंश में विवाह का निषेध था । विधवा विवाह एवं नियोग प्रथा भी प्रचलित थी । स्त्रियाँ सार्वजनिक उत्सवों में भाग लेती थीं , गुरुकुलों की भी शिक्षा में भाग लेती थीं तथा धार्मिक कार्यों को भी कराती थीं । उन्हें पिता,पति,भाई या पुत्र के संरक्षण में रहना पडता था ।

यद्दपि वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी परन्तु कठोर नहीं थी । व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार व्यापार चुननें मे स्वतंत्र था । सात्विक तथा तामसिक दोनों तरह के खानपान प्रचलित थे। सोमरस का प्रचलन तो था परन्तु उसे मर्यादित रुप में अपनाने को बल दिया जाता था। समयानुसार पहनावे पहने जाते थे। आर्यजन वल्कल , सूती एवं ऊनी तथा अनार्य जन जानवरों की खालें तथा वृक्षों की छालें पहनते थे।

मनोरंजन के लिए नाच, गाना, रथों का रेस , ड्रामा, वाद्य यंत्रों का प्रयोग तथा सांस्कृतिक आयोजन ,मेला एवं पर्व आदि सब पूरे मनोयोग से मनाया जाता था। स्त्री व पुरुष दोनों ही नाचते व गाते थे। शिकार खेलना आम जनता के लिए वर्जित था,केवल राजा वर्ग को इसकी अनुमति थी।[20]

संदर्भ

1. फ़हमी, कॉनराड हैकेट, मार्सिन स्टोनावस्की, युनपिंग टोंग, स्टेफ़नी क्रैमर, ऐनी शी और डालिया (9 जून 2025)। "2010 से 2020 तक वैश्विक धार्मिक परिदृश्य में कैसे परिवर्तन आया" । प्यू रिसर्च सेंटर । 10 जून 2025 को प्राप्त किया गया ।
2. "हिंदू जनसंख्या परिवर्तन" . 9 जून 2025.
3. नॉट 1998 , पृ. 3, 5.
4. हैचर 2015 , पृ. 4–5, 69–71, 150–152.
5. बॉकर 2000 ।
6. हार्वे 2001 , पृ. xiii.
7. "अध्याय 1 वैश्विक धार्मिक जनसंख्याएँ" (पीडीएफ) । जनवरी 2012। मूल (पीडीएफ) से 20 अक्टूबर 2013 को संग्रहित ।
8. डोमिनिक गुडॉल (1996), हिंदू धर्मग्रंथ , कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस, ISBN 978-0-520-20778-3पृष्ठ 9-xliii
9. आर.सी. ज़ाहनर (1992), हिंदू धर्मग्रंथ , पेंगुइन रैंडम हाउस, आई.एस.बी.एन. 978-0-679-41078-2पृष्ठ 1-11 और प्रस्तावना
10. लूडो रोचर (1986), द पुराणस, ओटो हैरासोवित्ज़ वेरलाग, आईएसबीएन 978-3-447-02522-5
11. मोरिज विंटरनिट्ज़ (1996)। भारतीय साहित्य का इतिहास । मोतीलाल बनारसीदास। पृष्ठ xv- xvi। ISBN 978-81-208-0264-3मूल रूप से 26 दिसंबर 2023 को संग्रहीत । 16 जून 2020 को पुनः प्राप्त किया गया ।
12. ज्ञानश्रुति, श्रीविद्यानंद (2007)। यज्ञ, एक व्यापक सर्वेक्षण । योग प्रकाशन ट्रस्ट। पृष्ठ 338। ISBN 978-81-86336-47-2.
13. जॉनसन, टॉड एम.; ग्रिम, ब्रायन जे. (2013). विश्व के धर्म आंकड़ों में: अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक जनसांख्यिकी का परिचय (पीडीएफ) . होबोकेन, एनजे: वाइली–ब्लैकवेल. पृष्ठ 10. मूल (पीडीएफ) से 20 अक्टूबर 2013 को संग्रहित . 24 नवंबर 2015 को पुनः प्राप्त ।
14. क्लोस्टरमायर, क्लाउस के. (2014). हिंदू धर्म: एक संक्षिप्त इतिहास . वनवर्ल्ड पब्लिकेशन्स. पृष्ठ 10. ISBN 978-1780746807.
15. पांडे, अंजली (2019)। "'फ्लैट–वर्ल्ड' फिक्शन को पुनः अंग्रेज़ी में ढालना"। वर्ल्ड इंग्लिशेस । 38 (1-2): 200-218 . doi : 10.1111/weng.12370 . S2CID 199152662 .
16. ज़ावोस, जॉन (अप्रैल 2001)। "हिंदू परंपरा की रक्षा: औपनिवेशिक भारत में रूढ़िवादिता के प्रतीक के रूप में सनातन धर्म" । धर्म । 31 (2): 109-123। doi : 10.1006 /reli.2001.0322 । ISSN 0048-721X ।
17. जेफरी डी. लॉन्ग (2007), हिंदू धर्म के लिए एक दृष्टिकोण, आईबी टॉरिस, आई.बी.एस.बी. 978-1-84511-273-8पृष्ठ 35–37
18. लॉयड रिजन (2003). प्रमुख विश्व धर्म: उनकी उत्पत्ति से वर्तमान तक । रूटलेज। पृ. 10-11 . ISBN 978-1-134-42935-6.उद्धरण: "अक्सर कहा जाता है कि हिंदू धर्म बहुत प्राचीन है, और एक अर्थ में यह सत्य भी है (...)।

इसकी उत्पत्ति फारसी मूल के शब्द ' हिंदू' में ग्रीक मूल के अंग्रेजी प्रत्यय '-ism' को जोड़कर हुई थी ; लगभग उसी समय , प्रत्यय '-ism' के बिना 'हिंदू' शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से एक धार्मिक शब्द के रूप में होने लगा। (...) 'हिंदू' नाम पहले एक भौगोलिक नाम था, धार्मिक नहीं, और इसकी उत्पत्ति भारत की नहीं बल्कि ईरान की भाषाओं में हुई थी। (...) वे गैर-मुस्लिम बहुसंख्यकों और उनकी संस्कृति को 'हिंदू' कहते थे। (...) चूंकि हिंदू कहलाने वाले लोग मुसलमानों से धर्म के मामले में सबसे अधिक भिन्न थे, इसलिए इस शब्द का धार्मिक अर्थ हो गया और यह उन लोगों के समूह को दर्शाने लगा जिनकी पहचान उनके हिंदू धर्म से होती थी। (...) हालांकि, अंग्रेजी में अब 'हिंदू' शब्द का प्रयोग एक धार्मिक शब्द के रूप में किया जाता है, और हिंदू धर्म एक धर्म का नाम है, हालांकि, जैसा कि हमने देखा है, हमें इससे उत्पन्न होने वाली किसी भी गलत एकरूपता की धारणा से सावधान रहना चाहिए।"

19. "सनातन धर्म: इसकी जड़ें और इसके उपयोग का ऐतिहासिक संदर्भ" । द टाइम्स ऑफ इंडिया । 12 सितंबर 2023। ISSN 0971-8257 । 14 जुलाई 2026 को पुनः प्राप्त किया गया ।
20. पेनिंगटन, ब्रायन के. (2005), क्या हिंदू धर्म का आविष्कार हुआ था?: ब्रितानी, भारतीय और धर्म का औपनिवेशिक निर्माण , ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ 111-118 , ISBN 978-0-19-803729-3मूल रूप से 31 मार्च 2024 को संग्रहित किया गया , 31 जुलाई 2018 को पुनः प्राप्त किया गया।